संगीतकार **स्टीव गोर्न**

दिल को भाई बांसुरी

दीपांजली काकाती

फोटो: हेमंत भटनागर

बाएं से : नई दिल्ली के त्रिवेणी कला संगम में 20 फरवरी 2006 को कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए संगीतकार समीर चटर्जी, स्टीव गोर्न और बरुण कुमार पाल

बांसुरी से निकले मधुर राग संगीत में दिलचस्पी रखने वाले भारतीय श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देते हैं। लेकिन अब बांस से बनी बासुंरी का जादू अमेरिकी कलाकारों को भी अपने घेरे में ले रहा है। कलाकार स्टीव गोर्न अमेरिकी हैं लेकिन बांसुरी इतने कुशल तरीके से बजाते हैं कि संगीतप्रेमी आंखें बंद कर लें तो उन्हें ऐसा लगेगा कि वे एक भारतीय संगीतकार को सुन रहे हैं। भारत के प्रसिद्ध बांसुरी-वादक हरिप्रसाद चौरसिया कहते हैं, ''स्टीव गोर्न ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अपनी बांसुरी में इतनी खूबी और सलीके से ढाल लिया है कि कोई भी उन पर गर्व कर सकता है।'' गोर्न भारत में विभिन्न समारोहों और उत्सवों के मौके पर बांसुरी बजाने नियमित रूप से आते रहते हैं। इस साल वह कोलकाता के साल्ट लेक संगीत पर्व, भोपाल के भारत भवन और वाराणसी की खास बैठकों में भाग लेने के लिए आए थे। कार्यक्रमों की इस श्रृंखला को उन्होंने फरवरी में नई दिल्ली में त्रिवेणी कला संगम और श्री अरबिंदो आश्रम में आयोजित कार्यक्रमों के साथ संपन्न किया।

न्यूयॉर्क शहर में पैदा हुए गोर्न की परवरिश पश्चिमी शास्त्रीय संगीत के बीच ही हुई। उनके पिता पियानोवादक थे। विश्वविद्यालय जाने से बहुत पहले गोर्न जॉज संगीत के प्रति आकर्षित हो गए थे। वह शुरुआत में टेनर सैक्सोफोन और बाद में पश्चिमी बांसुरी पर स्वर निकालने लगे। शुरुआती दौर में उन पर जॉन कोल्त्रैन, थेलोनियस मोंक, एरिक डॉल्फी और चार्ल्स मिंगस का प्रभाव पड़ा। भारतीय संगीत की तरफ वह कैसे आकर्षित हुए? गोर्न बताते हैं, ''ऐसा उसी तरह हुआ जैसे कि जॉन कोल्त्रैन और अन्य अपनी संगीत शैली में भारतीय संगीत के तत्वों को समाहित करने की शुरुआत कर रहे थे।''

उन्होंने अपने कॅरिअर की शुरुआत पेंसिल्वेनिया विश्वविद्यालय में संगीत के पहलुओं का अध्ययन करने वाले जॉज संगीतकार के रुप में की। लगभग उसी समय गोर्न को बिस्मिल्लाह खां की शहनाई, रविशंकर के सितार और अली अकबर खान के सरोद के अलौकिक स्वरों से रूबरू होने को मौका मिला। इनके आकर्षण में बंधकर गोर्न भारतीय संगीत की राह पर चल पड़े और वर्ष 1969 में एक दिन शाम के वक्त खुद को गंगा में तैरती एक नाव पर सारंगी के उस्ताद गोपाल मिश्रा के साथ पाया। गोर्न कहते हैं, ''मैंने महसूस किया कि कैसे यह संगीत स्वरों से आगे जाता है, उस सबसे आगे जिसे हम संगीत मानकर चलते हैं। किस तरह हकीकत में यह योग है, ध्यान का एक रुप।

भारतीय संगीत से प्रेरित होकर गोर्न ने वाराणसी में एक अध्यापक से शहनाई सीखना शुरु किया। वह कहते हैं, जब मैं पहली बार भारत आया तो मुझे भारत के बारे में कुछ भी पता नहीं था। सिर्फ यही पश्चिमी अवधारणा दिमाग में थी कि यहां का संगीत जॉज जैसा है और इसलिए मैंने शहनाई सीखना शुरू किया। उनके कॅरिअर में अहम मोड़ तब आया जब गोर्न मध्य प्रदेश के मेहर में एक मेले में गए। वहां उन्होंने सितार के उस्ताद निखिल बनर्जी को राग भैरव बजाते हुए सुना। वह याद करते हैं, ''उसी समय मुझे पता चल गया कि मैं इस यात्रा पर जीवन भर के लिए निकलना चाहता था।''

1970 में गोर्न कोलकाता पहुंचे जहां उन्हें बांसुरी बजाने वाले दूसरे कलाकार गौर गोस्वामी से मिलने के लिए निमंत्रित किया गया था। गोर्न तब तक वाराणसी में बांसुरी बजाना शुरु कर चुके थे। जब वे मिले, तो गोस्वामी ने गोर्न से कुछ बजाने के लिए कहा। ''जब मैंने बजाना खत्म किया, तो गोस्वामी बोले- तुम्हे संगीत का अच्छा बोध है, पर तुम्हें ढंग से सिखाया नहीं गया है। उन्होंने अपनी बांसुरी निकाली और मेरे लिए बजाना शुरु किया। सुर में गहराई के साथ ही उमंग और मखमलीपन था। सुर बहते रहे और समय रुक गया।'' गोर्न उनके साथ यात्रा पर निकले और श्रोताओं की दाद पाते रहे। एक साल बाद गोर्न ने अमेरिका के पॉप जगत को अपनी बांसुरी की लय से परिचित कराया और पाल साइमन, रिची हैवन्स, पाल विंटर, ग्लेन वेलेज के साथ रिकार्डिंग की।

उनके मौजूदा गुरु हैं-मुंबई के रघुनाथ सेठ। गोर्न कहते हैं, ''सौभाग्य से वह हर साल अमेरिका आते हैं, जहां हम लंबे समय के लिए बैठ सकते हैं। गोर्न की बांसुरी को सम्मेलन, अलबम, फिल्म, वीडियो, थियेटर और नृत्य प्रस्तुति में अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम मिल गए हैं। उन्होंने पाल साइमन की ग्रामी पुरस्कार के लिए नामांकित सीडी 'यू आर द वन' के लिए काम किया और मिकी लेमले द्वारा अमेरिकी आध्यात्मिक गुरु पर बनाए गए वृत्तचित्र 'रामदास फियर्स ग्रेस' में संगीत दिया। उनकी बांसुरी के सुर

न्यूयॉर्क में जन्मे गोर्न बांसुरी बजाने में इतने कुशल हैं कि यदि आप उनसे मिले बिना उन्हें सुनें तो भारतीय समझने की भूल कर सकते हैं। उन्होंने बांसुरी के सुरों को अमेरिका के पॉप जगत तक पहुंचाने में अहम भूमिका अदा की है।

'बोर्न इनटू ब्रोथल्स- नामक फिल्म में भी गूंजे। यह फिल्म उन सेक्स वर्कर के बच्चों पर है जो कोलकाता के रेडलाइट इलाकों में पल-बढ़ रहे हैं। इस फिल्म को वर्ष 2005 में अकादमी का सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र का पुरस्कार मिला है। वह कहते हैं, ''मुझे फिल्म के संगीत को बेहतर बनाने की आजादी दी गई थी। इससे मैं हर दृश्य पर निगाह रख पाया।'' गोर्न पॉप, लोक संगीत, जॉज, और नए दौर के संगीत में अपने काम से तमाम तरह के संगीत के बीच की खाइयों को पाटने का काम कर रहे हैं। ''पिछले कुछ सालों में पश्चिम में कई लोगों ने मेरे संगीत को योग करने में मददगार पाया है।'' उनकी पहचान वह लय है जो पारंपरिक शास्त्रीय संगीत को समकालीन विश्व संगीत से जोड़ती है। यह ऐसे मीठे सुर का सृजन करती है, जो पश्चिमी श्रोताओं को प्रभावित करता है। जिन्हें इस जुगलबंदी में आनंद मिलता है, भविष्य में उनके लिए बहुत कुछ है। ''साठ के दशक में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति जो आकर्षण शुरु हुआ था, उसमें सतहीपन ज्यादा था। आज ऐसे लोग हैं जो इसका अध्ययन कर रहे हैं, आज संगीत सम्मेलनों से रूबरू होने के ज्यादा अवसर हैं और इस बेजोड़ संगीत के लिए वास्तविक प्रशंसा मिलती दिखाई देती है।'' □